B.A. II Hindi Hons.

"आदिकाल की प्रवृत्तियाँ" — काव्यांश

डॉ० सुनीता [illegible] पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एल० एस० कॉलेज, मुजफ्फरपुर।

(1) रासो काव्य :- आदिकाल के अधिकांश काव्य ग्रंथों का नाम रासो से जुड़ा हुआ है। विद्वानों का [illegible] रासो का सम्बन्ध 'रास' से जोड़ते हैं तो दूसरा वर्ग 'रसायन' से [illegible] कर इसे देखते हैं। कुछ लोग इसे व्याकरण के अर्थ में भी प्रयुक्त मानते हैं। किंतु रासो का प्रयोग तत्कालीन चरित काव्य के लिए किया जाता था। यही कारण [illegible] इसे प्रामाणिक भी नहीं [illegible] होता है। इस काल में अधिकांश काव्य ग्रंथ रासो से जुड़ा हुआ है जैसे पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो, खुमानरासो, परमाल रासो इत्यादि। [illegible] है अधिकांश को रासो शब्द से अभिहित किया जाना [illegible] का प्रतीक था। इसलिए [illegible] काव्य को रासो कहा जाता रहा होगा। इसलिए [illegible] कवियों ने अपने काव्य के साथ रासो शब्द जोड़ दिया जिससे रासो काव्य की भरमार इस युग में दिखलाई पड़ता है।

(2) छन्दों का बहुविध प्रयोग :- इस काल के समस्त काव्यों में विविध छन्दों का बहुतायत से प्रयोग हुआ है। छन्द प्रयोग ही सबसे बड़ी विशेषता है कि [illegible] में छन्दों की भी भिन्नता दिखलाई पड़ती है। इसलिए यह काल अपने पूर्ववर्ती कालों से अधिक समृद्ध प्रतीत होता है। इस काल में बहुविध छन्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे- पद्धरि, आर्या, दोहा, तोटक, तोमर, गाथा, गाहा, साटक, रोला, उल्लाला तथा कुंडलियां। छन्द प्रयोग को ध्यान में रखते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं - "रासो के छन्द जब बदलते हैं तो श्रोता के चित्त में प्रसंगानुकूल नवीन कम्पन उत्पन्न करते हैं।" तात्पर्य यह कि छन्दों का यह प्रयोग स्वाभाविक एवं प्रसंग के अनुकूल है जो अपने आप में विशिष्ट है।

(९) ऐतिहासिकता का अभाव :- इस काल के चरितकाव्यों में ऐतिहासिक एवं प्रसिद्ध चरितनायकों को काव्य का विषय बनाया गया है किन्तु उनसे सम्बद्ध रचनाएं इतिहास की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। इनमें उल्लिखित संवत, नाम इत्यादि ऐतिहासिक तथ्यों से मेल नहीं खाती। यही नहीं अपने समसामयिक संस्कृत काव्य ग्रंथों में उल्लिखित तिथियों से भी मेल नहीं खाती। स्पष्ट है कि इन कवियों ने ऐतिहासिक तथ्यों के स्थान कल्पना की ही अधिकता है। कुछ लोगों का मत है कि काव्य काव्य है, इतिहास नहीं। काव्य से इतिहास का काम नहीं लिया जाना चाहिए। इस कथन में सच्चाई है फिर भी जब चरित नायक ऐतिहासिक होतो उससे जुड़े तथ्य भी ऐतिहासिक होने की अपेक्षा रखते हैं। किन्तु कई ग्रन्थों में ऐसी सुसंगत स्थिति नहीं है। इन काव्यों में कुछ तथ्य भी अंकित हैं जो बहुत बाद में घटित हुए हैं। स्पष्ट है कि इनमें ऐतिहासिकता ही नहीं प्रामाणिकता का भी अभाव है। इसीलिए इस काल के काव्य शोधकार्य की अपेक्षा रखते हैं क्योंकि प्रामाणिकता और ऐतिहासिकता - दोनों ही दृष्टियों से इस काल की रचनाएं संदिग्ध हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि इस काल के साहित्य का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दोनों ही दृष्टियों से महत्व है। हिन्दी भाषा के विकास की स्थितियों का अध्ययन करना हो या साहित्य के विकास के अध्ययन की स्थिति हो दोनों ही दृष्टियों से इस काल की रचनाएं महत्वपूर्ण हैं। अनेक दृष्टियों से इस काल की रचनाएं संपूर्ण हिन्दी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखती हैं। इस काल की रचनाओं का महत्व ऐतिहासिक है।

notes
Phone
email
website